समसत्र-4 B.A.

<u>पारिभाषिक शब्दावली</u>

(अर्थ , अवधारणा, परिभाषा ,वर्गीकरण प्रवृतियां एवं विशेषताएं)

- डॉ० यशोधरा राठौर

हमें ज्ञात है कि शब्द भाषा की स्वतंत्र और सार्थक लघुतम इकाई है जिसके अंतर्गत तीन बातें आती हैं -

1-शब्द भाषा की इकाई है ।
2-शब्द को सार्थक होना आवश्यक है ।
3-शब्द स्वतंत्र होते हैं और इन्हीं शब्दों के मेल से भाषा का निर्माण होता है ।

हमारे दैनिक जीवन में भाषा प्रयोग का बहुत बड़ा स्थान है। अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए हम इसी का सहारा लेते हैं ,जिसमें शब्दों की अहम भूमिका होती है। अपनी आवश्यकता के मुताबिक हम शब्दों का गठन कर उसका प्रयोग करते हैं। इन्हीं शब्दों के गढ़ाव की प्रक्रिया को **<u>पारिभाषिक शब्द निर्माण की प्रक्रिया</u>** भी कहा जाता है । इस क्रम में हम दूसरी भाषाओं से भी शब्दों को ग्रहण कर पारिभाषिक शब्दों के लिए प्रयुक्त करते हैं । जैसे- संस्कृत में आकाशवाणी ,परीक्षा । अंग्रेजी में अपील ,प्रेस ,गुडविल ।

उर्दू फारसी में -अदालत, फरार, बयान आदि परंतु ,इतने ही पारिभाषिक शब्द पर्याप्त नहीं होते हमें अपने उपयोग के लिए नए-नए शब्दों का भी निर्माण करना पड़ता है और ऐसे शब्द निर्माण की प्रमुख तीन प्रवृतियां हैं-

1- **राष्ट्रीयतावादी**
2-**अंतर्राष्ट्रीयतावादी** और
3- **लोकवादी**

राष्ट्रीयतावादी प्रवृत्ति के लिए हम नए शब्द के लिए संस्कृत के उपसर्ग ,प्रत्यय ,समास आदि से शब्द निर्माण करते हैं जैसे न्यायालय, कार्यालय, चलचित्र दूरदर्शन ,आयुक्त ,कुलसचिव आदि अंतर्राष्ट्रीयतावादी प्रवृत्ति के पक्षधर ज्यादातर इंजीनियर ,विधिवेता,विज्ञान वेता आदि बहुशिक्षित लोग होते हैं, जिनकी कल्पना में हिंदी में शब्द नहीं के बराबर होते हैं और इसके लिए वे अंग्रेजी से शब्द लेते हैं और आवश्यकतानुसार उसे निर्मित करते हैं जैसे मीटर , रीडर रडार ,ऑक्सीजन, नाइट्रोजन आदि ।

इसी प्रकार **लोकवादी** प्रवृत्ति के अंतर्गत लोक प्रचलित शब्दों से शब्द निर्माण की प्रक्रिया होती है जैसे ,घरेलू मामले निपटाने डाकघर ,घर, बेशक आदि शब्द। कुल

मिलाकर यह कहा जा सकता है कि पारिभाषिक शब्दों के निर्माण की प्रवृतियां अकेले हिंदी के शब्दों के साथ न्याय नहीं कर सकतीं। सुविधा और औचित्य की दृष्टि से ही इनका प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाता है निष्कर्ष के रूप में-

1-सामान्यतया परिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो किसी विषय विशेष में आवश्यकतानुसार प्रयुक्त किए जाते हैं।

2-जिसकी किसी विषय या सिद्धांतों के प्रसंग में कोई सुनिश्चित परिभाषा होती है।

3-जिसके अर्थ की परिधि सुनिश्चित होती है ।

4-जो अन्य प्रकार के पारिभाषिक शब्दों से अपने अर्थ और प्रयोग में भिन्न दिखाई पड़ते हैं ।

इस प्रकार हम पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ एवं अवधारणा से परिचित होते हैं।

हमें ज्ञात है कि ज्ञान विज्ञान के क्षेत्रों में निरंतर

होते अनुसंधान एवं चिंतन के परिणाम स्वरूप नवीन कल्पना को संयोजित कर वस्तुओं को एक निश्चित अर्थ के साथ व्यक्त करने के लिए पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता पड़ती है। अपनी प्राचीन भाषाओं से संबंधित शब्दों को लेकर या आम बोलचाल की भाषा से प्रचलित शब्दों को लेकर या विदेशी भाषाओं से शब्द ग्रहण करके उसका विस्तार करके पूरा करते हैं जैसे आकाशवाणी, ग्रीन रूम ,अकादमी जैसे शब्द। दरअसल ,किसी भी भाषा की सृजनात्मकता की पहचान इस बात से भी होती है कि एक मूल शब्द से उपसर्ग ,प्रत्यय तथा समाज पद्धति द्वारा उसके कितने नए शब्द बनाए जा सकते हैं। ध्यान रखना बहुत जरूरी है कुछ पारिभाषिक शब्द ऐसे भी होते हैं जो विषय विशेष में तो पारिभाषिक अर्थ में प्रयुक्त होते हैं परंतु ,उसके बाहर उनका प्रयोग सामान्य भाषा में समान अर्थों में होता है ,इसीलिए इनका वर्गीकरण दो भागों में किया गया है-

1- <u>पूर्णपारिभाषिक शब्द</u> और
2- <u>अर्ध्यपारिभाषिक</u> <u>शब्द</u>।

पूर्ण पारिभाषिक शब्द वैसे शब्द है जो मात्र पारिभाषिक अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं ।इसका प्रयोग क्षेत्र ज्ञान -विज्ञान का

होता है सामान्य बोलचाल -का नहीं ,जैसे दशमलव यह गणित का शब्द है ।क्रिया विशेषण यह व्याकरण का शब्द है।

इसी प्रकार अर्धपारिभाषिक शब्द ऐसे शब्द हैं जो एक तरफ तो विशिष्ट विज्ञान या शास्त्र में प्रयुक्त होकर पूर्ण पारिभाषिक शब्दों का कार्य करते हैं तो दूसरी तरफ साधारण व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त होने पर सामान्य शब्द के रूप में आ जाते हैं, जैसे शक्ति, अक्षर ,असंगति, आपत्ति ध्वनि आदि ऐसे ही शब्द है जो क्रमशः व्याकरण ,अलंकार शास्त्र, विधिशास्त्र आदि में प्रयुक्त होते हैं, परंतु ,साधारण बोलचाल की भाषा में सामान्य अर्थों में भी प्रयुक्त किए जाते हैं ।
इस प्रकार हम परिभाषिक शब्दावली की अवधारणा, उसके अर्थ , भेद एवं उपादेयता को समझ सकते हैं ।

.....

<u>पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताएं -</u>

पारिभाषिक शब्दावली की निम्नांकित विशेषताएं होती हैं -

1-इन शब्दाविलयों का अर्थ स्पष्ट और सुनिश्चित होता है। एक विषय या सिद्धांत में उनका केवल एक ही अर्थ होता है ।

2-किसी एक विषय में संकल्पना या वस्तु के लिए एक ही पारिभाषिक शब्द का इस्तेमाल होता है ।

3-पारिभाषिक शब्द यथासाध्य छोटे होनी चाहिए ताकि इनकी प्रयोग में असुविधा ना हो ।

4-पारिभाषिक शब्द यथासाध्य मूल होना चाहिए ,इन्हें व्याख्यात्मक नहीं होना चाहिए। उदाहरण स्वरूप जीव विज्ञान में 'दीमक' शब्द सही है पर 'सफेद चींटी' व्याख्यात्मक है उसी प्रकार अनशन शब्द सटीक है पर भूख हड़ताल व्याख्यात्मक है।

5-परिभाषिक शब्द ऐसे होनी चाहिए जिससे सरलतापूर्वक नए शब्दों का निर्माण किया जा सके ।जैसे 'मानव' इस शब्द से सरलता पूर्वक कई शब्द बनाए जा सकते हैं। यथा -मानवता ,मानवीय मानवीकरण, मानविकी इत्यादि परंतु ,इसके स्थान पर यदि हम 'ग्रीनरी' शब्द का प्रयोग करें तो

उससे इस प्रकार के शब्द नहीं बनाए जा सकते, जबकि उसका भी अर्थ मानव ही होता है।

6-पारिभाषिक शब्दों में एकरूपता का होना आवश्यक है जैसे भाषा विज्ञान में स्वनिम, रूपिम, अर्थी रूपिम ,अर्थ ,इन ,रूप उप ,अर्थ ,उपले आदि शब्द ।इसके ठीक विपरीत ,यदि स्वनिम को हम ध्वनि ग्राम कहते हैं तो रूपा, माटी के साथ उसकी एकरूपता नहीं रहेगी ।

इस प्रकार ,उपर्युक्त विशेषताएं परिभाषिक शब्दावली को रेखांकित करती है।

***